B.A. Part II - Sem IV

Paper - C - 8

History of West Asia

अरब लीग की असफलता के कारण

जिन उद्देश्यों को लेकर अरब लीग का गठन किया गया था, वे उद्देश्य अरब राज्यों के आपसी मतभेद, फूट एवं गुटबंदियों के कारण पूरे नहीं हो सके। अरब लीग के सदस्यों में उत्साह की कमी नजर आने लगी। 1954 में इसे फिर से सशक्त बनाने के लिए सम्मेलन का आयोजन किया गया, पर इसका कोई प्रभाव नहीं हुआ।

अरब लीग की असफलता के कारण :

इजरायल के निर्माण के बाद अरब राज्यों में सैनिक संगठन बन गया था लेकिन इसे सदस्य राज्यों का सहयोग अधिक दिनों तक नहीं मिला।

अतः इसकी असफलता के मुख्य कारण रहे —

1. अरब राज्यों की आपसी प्रतिद्वन्द्विता —

(i) अरब राज्यों में मिस्र सबसे अधिक प्रगतिशील था, अतः अरब लीग का नेतृत्व वह अपने हाथ में रखना चाहता था। (ii) दूसरी ओर इब्न सऊद का सहयोगी था, उसके राज्य में मक्का और मदीना जैसे इस्लाम के तीर्थस्थल थे, अतः वह नेतृत्व का स्वयंभी हकदार मानता था। (iii) इसके अलावा इराक और

Scanned with CamScanner

जॉर्डन के हाशिमी शासकों को इब्न सऊद का नेतृत्व स्वीकार नहीं था क्योंकि इब्न सऊद ने हज्जाज में उनके पिता शरीफ हुसैन को पराजित कर उनके देश पर कब्जा जमा लिया था।

(iv)- इब्न सऊद वहाबी पंथ को मानने वाला था। उसे असभ्य लोगों का नेता माना जाता था।

(v)- इब्न सऊद इराक और जॉर्डन के बीच होने वाले संगठन का भी विरोध करता था।

(vi) इब्न सऊद सीरिया को अपने प्रभाव में रखने के लिए 60 लाख डॉलर का ऋण भी दिया था। अमीर अब्दुल्ला और इब्न सऊद के बीच अकाबा

(vii) बंदरगाह के प्रश्न पर भी मतभेद थे। अतः ब्रिटिश सरकार ने उसे ट्रांस-जॉर्डन दे दिया। लेकिन मतभेद धीरे-धीरे बढ़ता गया।

2- अरबों में लोकतांत्रिक भावना का अभाव था। यद्यपि उनमें राष्ट्रीय भावनाओं का उदय हो गया था, पर वह अपने देशों से सम्बन्धित थी। उदाहरणस्वरूप इब्न सऊद ने फिलिस्तीन विद्रोहियों के साथ सहानुभूति तो प्रगट की, लेकिन विरोधियों को तेल अधिकार समाप्त करने के मामले में तटस्थ रहा तथा लीग के निर्णय का विरोध किया।

3- अरब राष्ट्रों में एकता को पाश्चात्य राष्ट्र अपने हितों के लिए उचित नहीं ठहराते थे। उनकी राजनीति थी कि अरब राष्ट्र सदैव कमजोर एवं बिखरे रहें। लेकिन अरब राज्य अपनी अपनी

आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सदैव अपर निर्भर रहे। अमेरिका मिस्त्र पर सोवियत प्रभाव को बढ़ता देख नहीं सहन कर रहा था। इस प्रकार पश्चिमी शक्तियाँ अरब के विकास में बाधक ही रहीं।

4- जनता में शिक्षा और चेतना का अभाव था। उनकी चेतना वैज्ञानिक आधार पर नहीं बन पाई थी। अतः शासकों के समक्ष अपनी बातों को तर्क पूर्ण रखने में वे असमर्थ रहे।

5- पश्चिमी ताकतें अरब जगत में अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए सदैव फूट डालने का प्रयास करती रही। जैसे इराक और जार्डन अमेरिकी और ब्रिटिश गुट में शामिल हो चुके थे। इसी ओर मिस्त्र एवं सीरिया रूस समर्थक रहे। पश्चिमी शक्तियाँ सदैव फूट डालने में प्रयासरत रहीं। इसी उद्देश्य से पश्चिमी राज्यों ने बगदाद पैक्ट गठित की। इस पैक्ट से अरब जगत की एकता को जबरदस्त धक्का पहुंचा। बगदाद पैक्ट से प्रभावित होकर इराक अरब लीग से अलग हो गया। कुछ अरब राज्यों ने आइजन हावर सिद्धान्त अपनाकर लीग को कमजोर कर दिया।

अरब लीग को तब झटका लगा, जब कुछ अरब राज्य मिलकर आपस में संघ बनाने लगे। पहले मिस्त्र और सीरिया मिलकर संयुक्त अरब गणराज्य की स्थापना की। फिर इराक और जार्डन संगठित हो गए। मिस्त्र के राष्ट्रपति नासिर अरब लीग पर मिस्त्र का प्रभुत्व कायम

करने लगे। सन् 1979 ई० में ट्यूनिसिया अरब लीग से अलग हो गया। इससे भी अरब लीग की नींव कमजोर हुई।

इस प्रकार अरब देशों की अलगावी राजनीति, जनता और शासक के बीच बढ़ती खाई ने अरब लीग को व्यवहारिक रूप देने में असफल रही। यद्यपि आज अरब लीग में लीबिया, सूडान, कुवैत, मोरक्को, अल्जीरिया और ट्यूनिशिया शामिल हो गए हैं, लेकिन यदि मिस्र, सीरिया, इराक, यमन, जोर्डन, लेबनान, मोरक्को, अल्जीरिया, लीबिया, सऊदी अरब आदि राष्ट्र अपने मतभेदों को दूर कर एक हो जाएं, तब विशाल अरब संघ का निर्माण हो सकता है।

oo